माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल (Multitasking Skill), सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन

शिक्षाशास्त्र में पीएच०डी० उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी

स्वाती तिवारी

शोध निर्देशिका
प्रो. लाजवन्ती
(डिपार्टमेण्ट ऑफ पेडगोजिकल साइंसेज,
शिक्षा संकाय)

सह शोध निर्देशिका
डॉ. प्रीत कुमारी
(डिपार्टमेण्ट ऑफ साइकोलॉजी,
सामाजिक विज्ञान संकाय)

डिपार्टमेण्ट ऑफ पेडगोजिकल साइंसेज, शिक्षा संकाय
दयालबाग शिक्षा संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा-282005

2022

1.0.0 - प्रस्तावना -

शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को उजागर करती है। शिक्षा द्वारा ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे व्यक्ति अपनी मूलभूत क्षमताओं का पूर्णतया विकास करने की ओर अग्रसर हो सके। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।" शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा द्वारा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिमार्जन किया जाता है और उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी कहा गया है कि "शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है।"

आज के प्रतियोगितावादी युग में शिक्षा में गुणवत्ता एक मूल आवश्यकता होती जा रही है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसरो को उपलब्ध करने का प्रस्ताव रखा गया है जिससे देश के आने वाले भविष्य को सँवारा जा सके। कोठारी कमीशन (1964-66) में इस बात पर बल दिया गया है कि देश का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है और इसके निर्माण का कार्यभार विद्यालयों के शिक्षकों पर निर्भर है। शिक्षकों द्वारा छात्रों के भविष्य को उन्नत आकार देने का प्रयास किया जाता है जिससे देश के बेहतर भविष्य की कल्पना साकार सिद्ध हो सकती है। अतः शिक्षकों द्वारा छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा देकर देश के भविष्य को उन्नत बनाना नितांत आवश्यक है।

शिक्षा के गुणात्मक व परिमाणात्मक विकास के लिए देश के प्रशासक व योजना निर्माता अनेक प्रयत्न करते रहे हैं, जैसे - पाठ्यक्रम में सुधार, प्रशासन व संगठन सम्बन्धी सुधार, शिक्षण - विधियों में सुधार व विकास, परीक्षा प्रणाली में सुधार, शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुविधा, शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता में वृद्धि, किन्तु फिर भी शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने की समस्या वैसे ही बनी हुई है । इस समस्या की गंभीरता पर विचार करने पर यह बात ज्ञात होती है कि शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के अधिकांश प्रयासों में शिक्षकों की अवहेलना होती रही

है, जबकि शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने तथा शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने का दायित्व शिक्षक पर होता है।

शिक्षण एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। शिक्षण कला में दक्ष शिक्षक ही छात्रों के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाते हुए अधिगम परिस्थितियों को प्रभावशाली बना सकता है। शिक्षण को परिभाषित करते हुए गेज (1962) ने कहा है कि "शिक्षण वह प्रक्रिया है, जहाँ छात्र एवं शिक्षक के पारस्परिक प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है, जिसमे व्यावहारिक क्षमताओं के विकास का लक्ष्य होता है। कुलश्रेष्ठ (1999) के शब्दों में "शिक्षण, प्रक्रियाओं की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमे एक व्यक्ति दूसरे को ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षण के कार्य को सम्पन्न करने के लिए अनेक प्रकार की क्रियायें करता है और छात्रों के व्यवहार में आत्मीयता के साथ वाँछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता हैं।"

कुशल शिक्षकों के आभाव में किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली प्रभावहीन हो जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में शिक्षकों के महत्व को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि "शिक्षकों को समाज में सर्वाधिक सम्माननीय और अनिवार्य सदस्य के रूप में पुनः स्थान देने में सहायता करनी होगी क्योकि शिक्षक ही नागरिकों की हमारी अगली पीढ़ी को सही मायने में आकार देते हैं। अतएव शिक्षकों को सक्षम बनाने हेतु हर संभव प्रयास किये जाने की आवश्यकता है जिससे वे अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली रूप में सम्पन्न के सकें।"

सृजनात्मकता एक ऐसा विचार है जिसके माध्यम से व्यक्तियों में निहित मौलिक सम्भावनाओ को विकसित किया जाता है। सृजनात्मकता का गुण व्यक्ति में उत्तरदायित्व की भावना के साथ ही साथ कार्य के प्रति निष्ठा,परिश्रम की भावना तथा कार्य पूर्णता के प्रति सजगता की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सृजनात्मकता के फलस्वरूप व्यक्ति में आत्मविश्वास की भावना भी प्रबल एवं सुदृढ़ होती है।

आत्मविश्वास एक ऐसा आंतरिक भाव है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने कार्यो में सफलता प्राप्त करता है। वर्तमान में शिक्षको में भी आत्मविश्वास का भाव होना नितांत आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में जैन (2015) ने भी कहा है "आत्मविश्वास से ओतप्रोत शिक्षक ही अपने शैक्षणिक क्रियाकलापों में ज्यादा सफल होते हैं। आत्मविश्वास

से परिपूर्ण शिक्षक मानसिक एवं भावनात्मक पक्ष से परिपक्व होता है तथा वह आशावादी, विश्वसनीय तथा जीवन में संतुष्ट होता है।" अतएव विभिन्न शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को आत्मविश्वास की भावना से परिपूर्ण होना चाहिए, जिससे वे शैक्षणिक क्षेत्र एवं विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के योग्य हों। शिक्षकों की क्षमताओं व विचारों में आत्मविश्वास की कमी उनके सृजनात्मक विचारों को दबा देती है। आत्मविश्वास सृजनात्मकता का हिस्सा है। आत्मविश्वास से मनुष्य में सृजनात्मक अन्तर्दृष्टि विकसित होती है। आत्मविश्वास सृजनात्मकता के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में है। सृजनात्मकता इस बात पर निर्भर करती है कि कोई व्यक्ति कितने आत्मविश्वास के साथ कार्य करता है। सृजनात्मक विचारों को प्रेरित करने में आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

वस्तुतः किसी भी उत्तम स्थिति में छात्र उत्तम शिक्षा तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि शिक्षक कुशल, प्रभावशाली, बहुकार्यात्मक कौशल में निपुण, सृजनात्मक क्षमता में दक्ष व आत्मविश्वास से ओतप्रोत न हो।

1.2.0 - समस्या का प्रादुर्भाव -

वर्तमान में शिक्षकों को शिक्षण के अतिरिक्त विद्यालयी व्यवस्था से जुड़े अन्य कार्यों में निपुण होना समय की आवश्यकता बन गयी है। एक अच्छे शिक्षक को शिक्षण कौशल में निपुण होने के अतिरिक्त एक अच्छा मार्गदर्शक, परामर्शदाता, परीक्षक, समय एवं कक्षा व्यवस्थापक, अनुशासक, कुशल संप्रेषक, नेतृत्वकर्ता, समस्या समाधानकर्ता आदि भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। ऐसा शिक्षक जो ईमानदारी से अपने उपरोक्त कर्तव्यों का निर्वहन करता है वह बहुकार्यात्मक कौशल में निपुण (मल्टीटास्कर) शिक्षक कहलाता है। नयनी (2020) ने कहा कि "एक शिक्षक को मल्टीटास्कर और मल्टीटैलेंटेड होना चाहिए क्योकि शिक्षकों के बिना कोई डॉक्टर नहीं, कोई इन्जीनियर नहीं, कोई वकील नहीं, कोई बैंकर नहीं, कोई मूर्तिकार नहीं कोई राजनेता नहीं। शिक्षकों का शिक्षण समाज के प्रत्येक पहलू का आधार है।" परन्तु कुछ अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि जब व्यक्ति एक

समय में एक ही कार्य को करता है तब वह अपने कार्य को अधिक प्रभावी तरीके से सम्पन्न करता है। दो या अधिक अलग-अलग कार्यों में एक साथ ध्यान केंद्रित करने से कार्य की गुणवत्ता में काफी कमी आती है।

शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता ही छात्रों के अधिगम परिणामों को उन्नत बनाती है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षकों के प्रभावशाली शिक्षण पर ही निर्भर करती है। छात्रों में सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास के विकास में भी शिक्षकों की सर्वाधिक भूमिका होती है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं भी सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास जैसे गुणों से युक्त हों जिससे कि वे अपने छात्रों के लिए आदर्श बन सके। इस सम्बन्ध में शोधार्थी द्वारा शिक्षकों की सृजनात्मकता, आत्मविश्वास एवं शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बन्धित कुछ अध्ययनों की समीक्षा की गई जो इस प्रकार है -

सारिणी संख्या - 1 अध्ययनों की समीक्षा

क्रम सं०	शोधकर्ता एवं वर्ष	शोध विषय	परिणाम
1	बोरकर (2013)	ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल इन रिलेशन टू टीचर्स स्ट्रेस	माध्यमिक स्कूल की शिक्षिकाओं में शिक्षकों की अपेक्षा अधिक तनाव है तथा तनाव एवं शिक्षक प्रभावशीलता में ऋणात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात तनाव के बढ़ने पर शिक्षक प्रभावशीलता घटती है तथा तनाव के घटने पर शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ती है।
2	खेमचंदानी (2016)	ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्फिडेंस इन रिलेशन टू द एज एंड मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन ऑफ टीचर ट्रैनीस	बी० एड० प्रशिक्षुओं के आत्मविश्वास एवं आयु के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है तथा आत्मविश्वास एवं शिक्षा के माध्यम के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। अर्थात उम्र बढ़ने के साथ आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ता है लेकिन शिक्षा के माध्यम का आत्मविश्वास के साथ कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। यह भी पाया गया कि अधिकांश बी० एड० प्रशिक्षुओं में औसत स्तर का आत्मविश्वास था।
3	उमगिआनेजा एवं बंसीलाल (2016)	टीचर्स कॉन्फिडेंस एंड बिलीव्स इन टीचिंग मैथमेटिक्स एंड स्टेटिस्टिक्स कॉन्सेप्ट्स	विभिन्न शिक्षण कौशलों के लिए शिक्षकों के आत्मविश्वास का स्तर भिन्न था। निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि गणित एवं सांख्यकीय शिक्षण से सम्बंधित कार्यशालाओं में भाग लेने वाले शिक्षकों व अपनी शिक्षा निरंतर जारी रखने वाले शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक था। उच्च आत्मविश्वास वाले शिक्षकों का गणित एवं सांख्यकीय शिक्षण और अधिगम के विषय में सकारात्मक विश्वास था।

4	रामनिवास (2017)	बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण मनोवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन	अधिकाँश बी.एड. छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति की अन्तर्वैयक्तिक स्थिति व सकारात्मक शिक्षण मनोवृत्ति पाई गयी। छात्राध्यापक अध्यापन कुशलता के लिए रचनात्मक क्रियाकलापों का उपयोग करते है।
5	तिवारी (2017)	वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं के तनाव एवं शिक्षण प्रभावशीलता के सह सम्बन्ध	वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के तनाव एवं शिक्षण प्रभावशीलता में अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सह सबंध है तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षकों के तनाव तथा शिक्षण प्रभावशीलता में निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है । अर्थात वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का व्यक्तिगत तनाव बढ़ने के साथ उनकी शिक्षण प्रभावशीलता घट रही है तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षकों का व्यक्तिगत तनाव बढ़ने पर उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ रही है।
6	कौर (2018)	राजस्थान एवं पंजाब के महिला व् पुरुष शिक्षा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन	राजस्थान एवं पंजाब के महिला एवं पुरुष शिक्षा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7	पाण्डेय (2018)	उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन	उच्चतर माध्यमिक शाला के पुरुष तथा महिला शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम तथा शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है।
8	बाबू एवं सेठी (2019)	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का आत्मविश्वास: एक अध्ययन	माध्यमिक स्तर पर महिला और पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात आत्मविश्वास का लिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शासकीय व अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है।

9	प्रियंका (2019)	यू० पी० एवं सी० बी० एस० ई० बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर आई० सी० टी० के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर आई० सी० टी० कौशल का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । उत्तर प्रदेश एवं सी० बी० एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर आई० सी० टी० कौशल का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
10	जामिआ, नाजिर एवं सिद्धू (2020)	मल्टीटास्किंग एंड जॉब सेटिस्फेक्शन अमंग्स्ट सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एट द डिस्ट्रिक्ट ऑफ क्लांग, सेलंगोर, मलेशिया	मल्टीटास्किंग और व्यवसाय सन्तुष्टि के मध्य सकारात्मक, सार्थक एवं औसत स्तर का सहसम्बन्ध है। अधिकांश (92 प्रतिशत) शिक्षक इस बात से सहमत थे कि मल्टीटास्किंग और व्यवसाय से सन्तुष्टि के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है। अध्ययन में पाया गया कि मल्टीटास्किंग व्यवसाय सन्तुष्टि का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। इसीलिए शिक्षक अपने व्यवसाय में सन्तुष्टि एवं बेहतर प्रदर्शन के लिए अपनी नियमित गतिविधियों में बहुकार्यात्मक क्षमता में कुशल होना सीख सकते हैं।
11	चेन एवं युआन (2021)	द स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप ऑफ टीचर्स क्रिएटिव टीचिंग, इमेजिनेशन एंड प्रिंसिपल्स विशनरी लीडरशिप	शिक्षकों की कल्पना के प्रत्येक आयाम का शिक्षकों के सृजनात्मक शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

1.3.0- समस्या का औचित्य -

एक शोधार्थी के रूप में यह महसूस किया गया कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों को बहुकार्यात्मक कौशलों में निपुण होते हुए अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास से युक्त शिक्षक न केवल शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावपूर्ण ढंग से करते हैं अपितु वे छात्रों के कौशलों को विकसित करने हेतु मार्गदर्शन देने में भी सहयोग देते हैं ताकि वे वर्तमान में वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली ढंग से कार्य करने हेतु सक्षम हो सकें। अतः शोधार्थी के मन में जिज्ञासा स्वरुप निम्न शोध प्रश्नों का प्रादुर्भाव हुआ -

1. क्या माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ता है?
2. क्या माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ता है?
3. क्या माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ता है?
4. क्या माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है?

उपरोक्त अध्ययनों को देखने के बाद शोधार्थी ने यह महसूस किया कि उपरोक्त चरों पर अध्ययन तो हुए हैं किन्तु वह अध्ययन अलग अलग एवं अन्य चरों के साथ हुए हैं। शोधार्थी की यह परिकल्पना है कि यदि शिक्षक अपने बहुकार्यों में संतुलन बनाते हुए सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास के साथ शिक्षण कार्य करे तो निश्चित ही उसकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ेगा।

1.4.0 - समस्या का अभिकथन -

शोध की लघु संक्षिप्तिका में समस्या का अभिकथन इस प्रकार है - "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन।"

1.5.0 - अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य बनाये जाएंगे -

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल तथा सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

1.6.0 - अध्ययन की परिकल्पनाएं -

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई जाएंगी -

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल तथा सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ेगा।
5. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ेगा।
6. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ेगा।

7. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ेगा।

1.7.0 - अध्ययन की परिसीमाएं -

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल 400 शिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन प्रयागराज मंडल के केवल दो जिलों तक ही सीमित किया जायेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।
4. प्रस्तुत अध्ययन को केवल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।

1.8.0 - अध्ययन के चर -

प्रस्तुत अध्ययन में तीन स्वतंत्र चर एवं एक आश्रित चर हैं -

1. स्वतंत्र चर - बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता तथा आत्मविश्वास।
2. आश्रित चर - शिक्षण प्रभावशीलता।

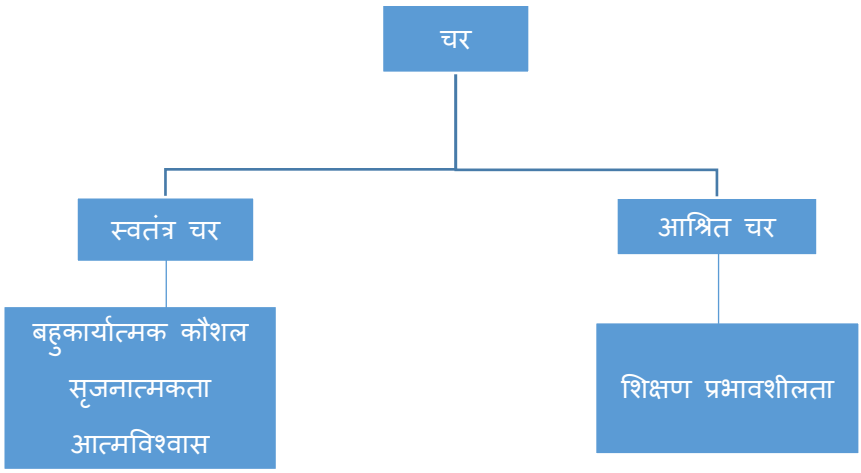

चित्र संख्या - 1 अध्ययन में प्रयुक्त चर

1.9.0 - चरों का परिभाषीकरण एवं उनकी संक्रियात्मक परिभाषा -

1.9.1- माध्यमिक स्तर - राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर से हमारा तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक के शिक्षकों को अपने अध्ययन में शामिल करने से है ।

1.9.2- बहुकार्यात्मक कौशल - लिन (2015) के अनुसार - "बहुकार्यात्मक कौशल को दो या दो से अधिक कार्यों को एक साथ करने या दो या दो से अधिक कार्यों के बीच तेजी से स्विच (switch) करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। "

प्रस्तुत अध्ययन में बहुकार्यात्मक कौशल से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा एक समय में एक से अधिक कार्यों के बीच तेजी से स्विच (switch) करने की प्रक्रिया से है जो उनको एक साथ कई कौशलों जैसे - सम्प्रेषण, नेतृत्व, समस्या समाधान, कक्षाकक्ष प्रबंधन, निर्देशन व परामर्श तथा तकनीकी आदि हेतु तैयार करती है।

1.9.3- सृजनात्मकता - गुप्ता (2012) ने सृजनात्मकता को परिभाषित करते हुए कहा कि - **"**सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नये ढंग से चिंतन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है ।**"**

प्रस्तुत अध्ययन में सृजनात्मकता से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अपने शिक्षण व्यवहार में अपनाये जाने वाले अंतर्क्रियात्मक विचार विमर्श एवं विचारों के प्रति तटस्थता सम्बन्धी सृजनात्मकता, शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री के उपयोग सम्बन्धी सृजनात्मकता, समस्या समाधान एवं विविध शिक्षण सम्बन्धी सृजनात्मकता तथा स्वायत्त अधिगम एवं चुनौती प्रस्तुत करने सम्बन्धी सृजनात्मकता आदि से है।

1.9.4- आत्मविश्वास - बंदुरा (1990) के अनुसार - "विशिष्ट परिस्थितियों में सफल होने या किसी कार्य को पूरा करने की क्षमता में विश्वास रखना ही आत्मविश्वास है।"

प्रस्तुत अध्ययन में आत्मविश्वास से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का स्वयं पर, अपनी कार्यक्षमता एवं कार्यप्रणाली आदि पर विश्वास होने से है जिससे वह अपने छात्रों के व्यक्तित्व को सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए स्वयं पर विश्वास करने हेतु विकसित कर सकें।

1.9.5- शिक्षण प्रभावशीलता - इवांस, (2006) के अनुसार - "शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षक एवं छात्र के मध्य होने वाली अंतःक्रिया है, जिसके परिणाम स्वरुप छात्रों के ज्ञान में वृद्धि होती है। शिक्षण प्रभावशीलता में शिक्षक का पाठ्यसामग्री से सम्बंधित ज्ञान, पाठ्य प्रस्तुतीकरण कौशल और अधिगम के लिए वांछनीय वातावरण के निर्माण का कौशल सम्मिलित है। यह शिक्षण प्रक्रिया के दौरान सम्प्रेषण कौशल, प्रशंसा, पुरस्कार, प्रेरणा आदि के उपयोग को भी सन्दर्भित करती है।"

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के अच्छे कक्षाकक्ष प्रबंधन कौशल से है। शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षकों द्वारा कक्षा को अनुशासित रखने, कक्षागत वातावरण को प्रभावी बनाने, छात्रों को आनंदमय शिक्षण अधिगम कराने तथा कक्षा शिक्षण के समय छात्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने से है।

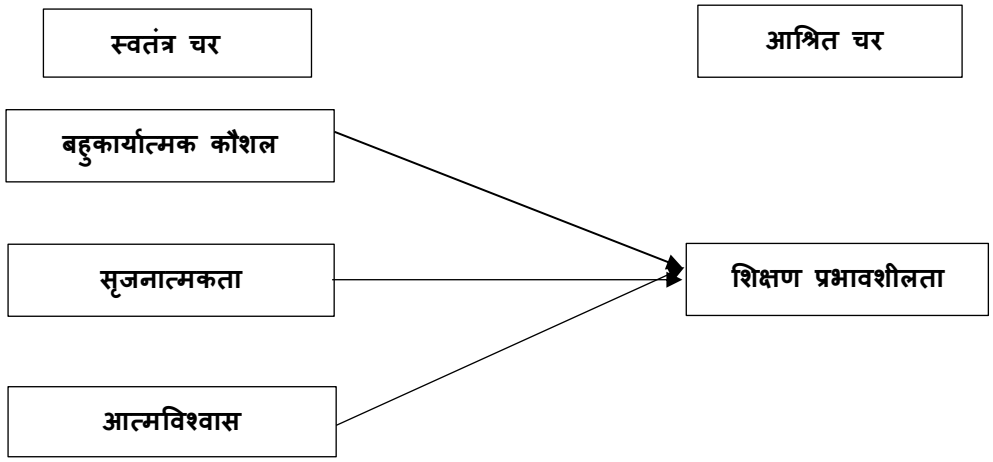

चित्र संख्या - 2 चरों का संकल्पनात्मक प्रारूप

1.10.0- अध्ययन की प्रक्रिया - अध्ययन की प्रक्रिया निम्न प्रकार है **-**

1.10.1- अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि - प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

1.10.2- अध्ययन में प्रयुक्त शोध अभिकल्प - प्रस्तुत अध्ययन में 2 x 2 x 2 कारकीय अभिकल्प का प्रयोग किया जायेगा।

1.10.3- अध्ययन की जनसंख्या - प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मंडल के समस्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को अपने अध्ययन की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया जायेगा।

तिवारी (2017) ने फतेहपुर जिले के शिक्षकों के तनाव एवं शिक्षण प्रभावशीलता के सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का व्यक्तिगत तनाव बढ़ने के साथ उनकी शिक्षण प्रभावशीलता घट रही है तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षकों का व्यक्तिगत तनाव बढ़ने पर उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ रही है।

उपर्युक्त परिणाम को देखने के पश्चात् शोधार्थी के मन में जिज्ञासा हुई कि फतेहपुर जिले के आस पास आने वाले अन्य जिलों में भी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर अन्य चरों के प्रभाव का अध्ययन किया जाए। अतः शोधार्थी ने अपने अध्ययन की जनसंख्या हेतु प्रयागराज मण्डल का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया है जिसके अंतर्गत चार जिले (फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रयागराज एवं प्रतापगढ़) सम्मिलित हैं।

1.10.4- मंडल का चयन - प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मंडल का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जायेगा।

1.10.5- जिलों का चयन - प्रयागराज मण्डल में कुल 4 जिले (फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रयागराज एवं प्रतापगढ़) सम्मिलित हैं, जिनमें से किन्ही दो जिलों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जायेगा।

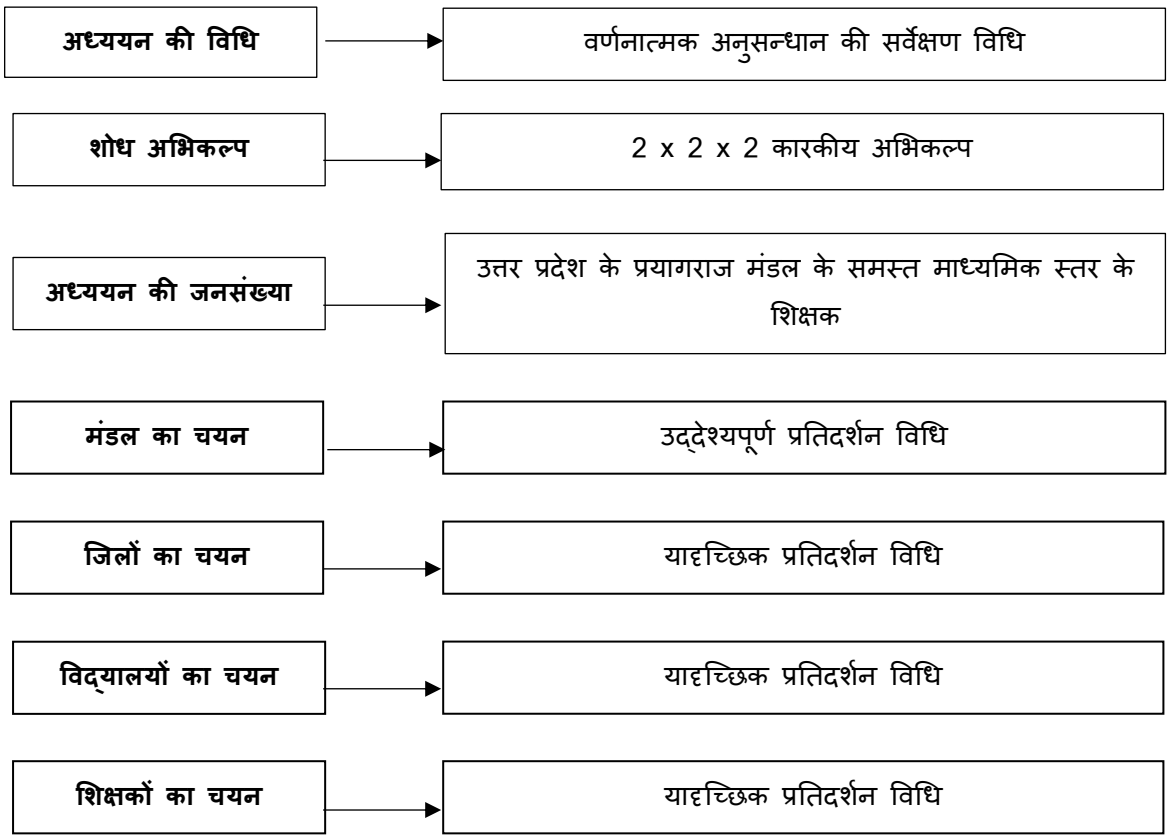

चित्र संख्या - 3 अध्ययन की प्रक्रिया

1.10.6- अध्ययन का प्रतिदर्श - प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज मंडल के 400 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में चुना जायेगा। प्रतिदर्श चयन हेतु 40 विद्यालयों (पहले जिले से 20 एवं दूसरे जिले से 20 विद्यालय) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जायेगा तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 - 10 शिक्षकों का चयन भी यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जायेगा। इस प्रकार प्रतिदर्श हेतु कुल 400 शिक्षकों का चयन किया जायेगा। क्योकि 400 शिक्षकों के चयन हेतु जिलों, विद्यालयों एवं शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जायेगा। अतः सम्भावना है कि प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करेगा।

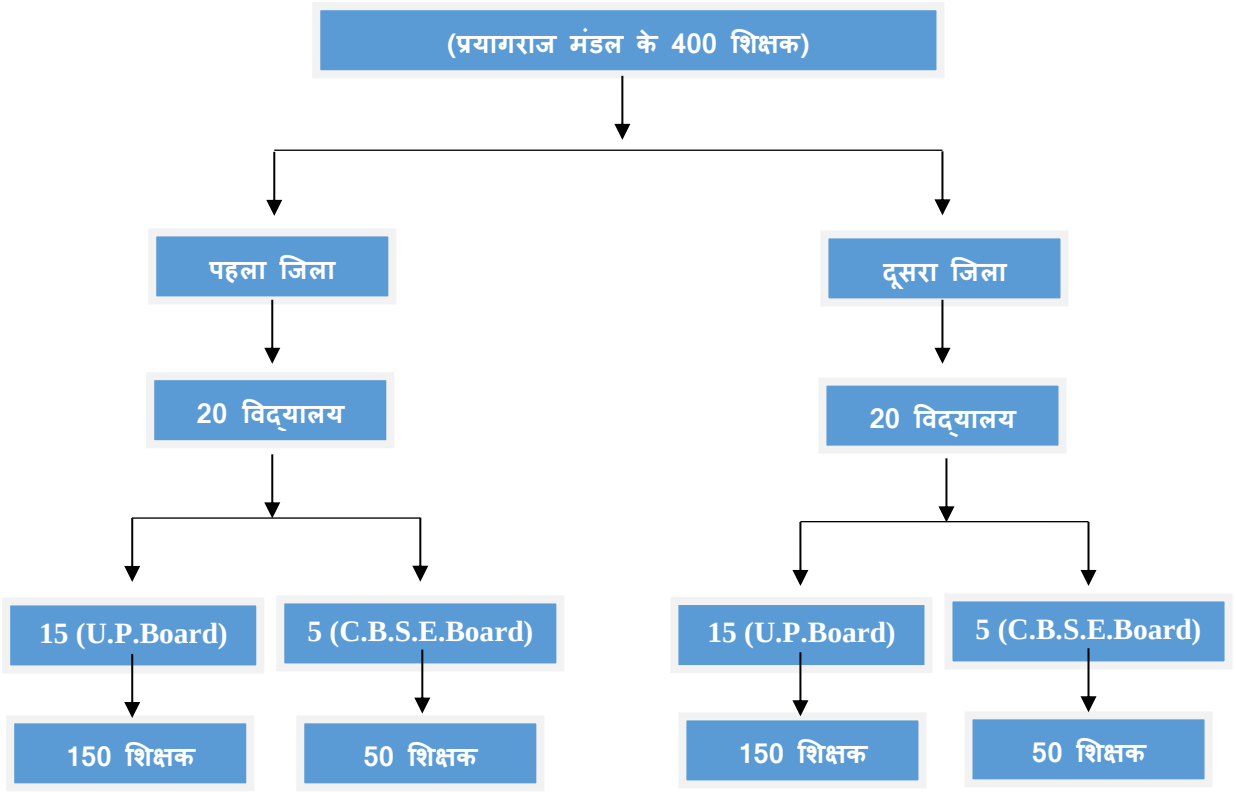

चित्र संख्या - 4 प्रतिदर्श चयन प्रक्रिया

1.11.0 - अध्ययन के उपकरण - अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण निम्न प्रकार हैं -

1.11.1 - बहुकार्यात्मक कौशल मापनी - प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशलों को मापने हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न आयामों से सम्बंधित स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा -

- सम्प्रेषण कौशल
- नेतृत्व कौशल
- समस्या समाधान कौशल
- कक्षाकक्ष प्रबंधन कौशल
- निर्देशन एवं परामर्श कौशल
- तकनीकी कौशल

1.11.2 - शिक्षक सृजनात्मकता मापनी - प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों की सृजनात्मकता को मापने हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न आयामों से सम्बंधित स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा -

- अन्तर्क्रियात्मक विचार विमर्श एवं विचारों के प्रति तटस्थता सम्बन्धी सृजनात्मकता
- शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री के उपयोग सम्बन्धी सृजनात्मकता
- समस्या समाधान एवं विविध शिक्षण सम्बन्धी सृजनात्मकता
- स्वायत्त अधिगम एवं चुनौती प्रस्तुत करने सम्बन्धी सृजनात्मकता

शिक्षकों के आत्मविश्वास के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा अवलोकित उपकरण -

सारिणी संख्या - 2 शिक्षकों के आत्मविश्वास के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा अवलोकित उपकरण

क्रम सं०	उपकरण निर्माणकर्ता का नाम	वर्ष	उपकरण का नाम	उपकरण का प्रशासन
1	गुप्ता	2007	आत्मविश्वास अनुसूची	किशोरों एवं वयस्कों पर
2	गुप्ता एवं झा	2014	टीचर्स सेल्फ कॉन्फिडेंस स्केल	पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर
3	सेठी एवं बाबू	2019	टीचर्स सेल्फ कॉन्फिडेंस स्केल	माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर

उपरोक्त उपकरणों के अवलोकन के पश्चात् शोधार्थी ने निर्णय लिया कि आराधना सेठी एवं अनिल बाबू द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग अपने अध्ययन हेतु करेगी क्योंकि यह उपकरण ही अध्ययन हेतु सर्वाधिक वैध है। इसका विवरण निम्न प्रकार है -

1.11.3 शिक्षक आत्मविश्वास मापनी - प्रस्तुत अध्ययन में **सेठी एवं बाबू (2019)** द्वारा निर्मित "टीचर्स सेल्फ - कॉन्फिडेन्स स्केल" का प्रयोग किया जायेगा। इस मापनी की प्रत्यक्ष वैधता निकाली गयी है तथा इसकी विश्वसनीयता 0.958 है। इस मापनी में कुल 90 एकांश हैं, जो कि निम्न विमाओं से सम्बंधित है -

- शिक्षण आत्मविश्वास

- व्यक्तित्व आत्मविश्वास
- सामाजिक आत्मविश्वास
- प्रबंधन आत्मविश्वास
- तकनीकी आत्मविश्वास

शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा अवलोकित उपकरण -

सारिणी संख्या - 3 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा अवलोकित उपकरण

क्रम सं०	**उपकरण निर्माणकर्ता का नाम**	**वर्ष**	**उपकरण का नाम**	**उपकरण का प्रशासन**
1	पूरी एवं गखर	2010	टीचर इफेक्टिवनेस स्केल	माध्यमिक से स्नातकोत्तर स्तर तक के शिक्षकों पर
2	धर एवं धर	2017	टीचर इफेक्टिवनेस स्केल	150 विद्यार्थियों पर
3	शर्मा एवं शर्मा	2021	टीचर्स इफेक्टिवनेस स्केल	शिक्षक प्रशिक्षकों पर
4	सरकार एवं देब	2021	टीचिंग इफेक्टिवनेस स्केल	300 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों पर

उपरोक्त उपकरणों के अवलोकन के पश्चात् शोधार्थी ने निर्णय लिया कि सरकार एवं देब द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग अपने अध्ययन हेतु करेगी क्योंकि यह उपकरण ही अध्ययन हेतु सर्वाधिक वैध है। इसका विवरण निम्न प्रकार है -

1.11.4 शिक्षण प्रभावशीलता मापनी - प्रस्तुत अध्ययन में **सरकार एवं देब (2021)** द्वारा निर्मित "टीचिंग इफेक्टिवनेस स्केल" का प्रयोग जायेगा। इस मापनी की प्रत्यक्ष वैधता निकाली गयी है तथा इसकी विश्वसनीयता 0.83 है। इस मापनी में कुल 40 एकांश हैं, जो कि निम्न विमाओं से सम्बंधित है -

- तैयारी
- प्रस्तुतीकरण
- क्रियान्वयन

- प्रबंधन

1.12.0- सांख्यिकी प्रविधियां -प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों को निम्न सांख्यकीय प्रविधियों द्वारा विश्लेषित किया जायेगा -

- **वर्णनात्मक सांख्यिकी -** मध्यमान, मानक विचलन
- **आनुमानिक सांख्यिकी -** त्रिमार्गीय प्रसरण विश्लेषण

1.13.0- अध्ययन की सार्थकता -

प्रस्तुत अध्ययन में विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने की परिकल्पना की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन के उपरांत यह ज्ञात हो सकेगा कि शिक्षकों के बहुकार्यात्मक कौशल किस प्रकार से उनके शिक्षण को प्रभावित करते हुए उनके शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाते या कम करते हैं तथा कौन सा कौशल शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने में अधिक सहायक हैं। साथ ही साथ यह ज्ञात हो सकेगा कि शिक्षकों की सृजनात्मक क्षमता उनके शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में किस प्रकार से सहायक है तथा आत्मविश्वास से ओतप्रोत शिक्षकों का शिक्षण किस प्रकार से प्रभावशाली होता है। अर्थात शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उपरोक्त चरों पर किस सीमा तक निर्भर करती है तथा इन चरों के माध्यम से किस प्रकार से शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। यह अध्ययन शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावशाली बनाने वाले घटकों की पहचान करने में भी सहायक होगा। शिक्षण को प्रभावशाली बनाकर बालकों के अधिगम परिणामों को उन्नत बनाने में भी यह अध्ययन अत्यधिक सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (1999). *शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर ।
- कौर, वी. (2018). *राजस्थान एवं पंजाब के महिला व पुरुष शिक्षा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन.* तांतिया विश्वविद्यालय. शोधगंगा. Retrieved from. http://hdl.handle.net/10603/276488
- कौल, एल. (2014). *शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली.* विकास पब्लिकेशन हाउस।
- गुप्ता, एस. पी. (2015). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2015). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* शारदा पुस्तक भवन।
- तिवारी, एस. (2017). *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षकों के तनाव एवं शिक्षक प्रभावशीलता के सम्बन्ध का अध्ययन (अप्रकाशित). (एम.एड. उपाधि हेतु लघु शोध प्रबन्ध).* शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर।
- निवास. आर. (2017). बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण मनोवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, 5* (7). 385-597.
- पाण्डेय, एन. (2018). उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन. *श्रृंखला एक शोध परख वैचारिक पत्रिका, वॉल्यूम 6* (4). 124--127
- प्रियंका. (2019). *यू० पी० एवं सी० बी० एस० ई० बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर आई० सी० टी० के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित).* (एम.एड. उपाधि हेतु लघु शोध प्रबन्ध). शिक्षा विभाग, दयालबाग शैक्षिक संस्थान आगरा।
- बाबू, ए. एवं सेठी, ए. (2019). माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास: एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ़ आचार्य नरेंद्र देव रिसर्च इंस्टिट्यूट, 27,* 197 - 203

- बोरकर, यू. ए. (2013). ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल इन रिलेशन टू टीचर्स स्ट्रेस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंस इन्वेंशन, 2*(12). 13 - 16 Retrieved from. www.ijhssi.org
- Bandura, A. (1990). Perceived Self-Efficiency the Exercise of Personal Agency. *Journal of Applied Sport Psychology*. *2*(3): 128-163.
- Chen, H. H. & Yuan, Y. H. (2021). *The Study of the Relationships of Teacher's Creative Teaching, Imagination, and Principal's Visionary Leadership*. SAGE, Retrieved from. https://doi.org/10.1177/21582440211029932
- Evans, E. D. (2006). *Transition to Teaching*. New York. Holt, Rinehart and Winston.
- Jamin, et al., (2020). Multitasking And Job Satisfaction Amongst Secondary School Teachers At The District of Klang, Selangor, Malaysia, *Social and Management Research Journal. 17*(1). 61-80 Retrieved From. https://ir.uitm.edu.my/id/eprint/13925/
- Khemchandani, B. S. (2016). A Study Confidence In Relation To The Age And Medium Of Instruction Of Teacher Trainees. *Paripex Indian Journal Of Research. 5*(4). 16-17.
- Lin, L. (2015). Multiple dimensions of multitasking phenomenon. *International Journal of Technology and Human Interaction. 9* (1). 37-49
- Nayani, S. (2020). Teacher, A Multi Tasker, *The Progressive Teacher Magazine*, New Delhi.
- Sarkar, S. & Deb, A. (2021). *Manual for Teaching Effectiveness Scale*, Agra, National Psychological Corporation.
- Sethi, A. & Babu, A.(2019). *Manual for Teacher's Self-confidence Scale*, Agra, National Psychological Corporation.
- Umugiraneza, et al., (2016). Teachers confidence and beliefs in teaching mathematics and statistics concepts. *Ponte International Scientific Research Journal. 72* (9). 31-46